# जादुई रत्न THE MAGIC GEM

## पी. बज़्होव P. BAZHOV

चित्र: एल. पनोवा

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

रत्नों की तलाश करना एक ऐसा धंधा था जो मुझे कभी पसंद नहीं आया. वैसे मैंने कभी-कभी रत्न खोजे भी, लेकिन बस संयोग से. जब आप नीचे धुले हुए कंकड़-पत्थरों को निहार रहे होते हैं और उनके बीच आपको कुछ चमकता हुआ दिखाई देता है. ठीक है, फिर आप उसे उठाते हैं और फिर उसे रत्नों के किसी पारखी व्यक्ति को दिखाते हैं - क्या मैं उसे रखूं या उसे फेंक दूं?

सोने को परखना काफी आसान होता है. उसे विभिन्न प्रकार से परखा जा सकता है, कुछ बेहतर, कुछ बदतर; लेकिन पत्थरों के साथ वैसा नहीं है. उनके साइज और वज़न का कोई मतलब नहीं होता है. आपके पास एक बड़ा और एक छोटा पत्थर हो सकता है, वे दोनों एक-जैसे चमक सकते हैं, लेकिन जब उनका परीक्षण किया जायेगा तो आप पाएंगे कि वे बिल्कुल अलग हैं. और फिर बड़े वाले के लिए लोग एक तांबे का सिक्का भी नहीं देंगे, जबकि छोटे वाले पत्थर को लेने के लिए सभी लोग उत्सुक होंगे, और वे कहेंगे कि उसमें असली आग है.

कई बार और भी विचित्र होता है. लोग आपसे एक पत्थर खरीदेंगे और वहीं देखते-देखते वे आपके सामने उसका आधा हिस्सा काटकर फेंक देंगे. "वो हिस्सा उसे केवल ख़राब बनाता है," वे कहेंगे, "वो उसकी आग को कम करता है." और फिर जो कुछ बचेगा उसका आधा हिस्सा वे घिस देंगे, और उसके गुणगान भी गाएंगे - "वो शुद्ध पानी है, अब वो इतना चमकेगा कि वो लैम्प को भी धूमिल कर देगा!" और वो सही भी होंगे, पत्थर अंततः छोटा हो जाएगा, लेकिन ऐसा लगेगा मानो वो जीवित हो और हंस रहा हो. लेकिन उसकी कीमत क्या होगी—वो कोई हंसी की बात नहीं होगी, आप उसे सुनकर हांफने लगेंगे.

लेकिन उन पत्थरों के बारे में जो आपको बीमारी से बचाते हैं, और जो पत्थर सोते समय आपकी रक्षा करते हैं, या दुःख दूर करते हैं और बाकी सब बातें, मुझे वो सिर्फ बेकार की बकवास लगती थीं, और कुछ नहीं. हालाँकि पत्थरों के बारे में एक कहानी मैंने अपने बुज़ुर्गों से सुनी थी जो मुझे बहुत पसंद आई थी. वो एक अच्छी गिरी वाले अखरोट जैसी थी, जिसके दांत अच्छे हों वे उसे तोड़ सकता था.

वे कहते हैं कि जमीन के नीचे कहीं एक पत्थर है, और उसके जैसा पत्थर कहीं और नहीं है, वो अपने जैसा इकलौता पत्थर है. वो पत्थर आज तक किसी को नहीं मिला. न केवल हमारे देश में, बल्कि अन्य देशों में भी, लेकिन उसका नाम हर जगह जाना जाता है. और वो पत्थर हमारी मिट्टी के नीचे है. पुराने लोगों ने उसका पता लगाया. लेकिन किसी को यह नहीं पता चला कि वो कहां छिपा था, लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, क्योंकि वो पत्थर खुद ही सही व्यक्ति के हाथ में पहुंच जाएगा. और यह उस पत्थर की खास बात थी. लोगों ने यह सब एक युवा लड़की से सीखा. और उन्होंने उसकी कहानी इस तरह सुनाई:

मुर्ज़िंका के पास, या शायद वो कोई और जगह थी, एक बड़ी अयस्क की खदान थी. वहां पर उन्हें सोना और सभी प्रकार के रत्न मिले.

उन दिनों वो राजा की भूमि थी. तब अधिकारी अपने चमकीले बटनों के साथ - वर्दी में कसाई होते थे - वे लोगों को ढोल बजाकर काम करने के लिए भेजते थे. तब मज़दूरों को लाइनों में कोड़ों से पिटते हुए आगे बढ़ना होता था. यह मज़दूरों के लिए बड़ी कठिन यातना होती थी.

इन सबके बीच एक छोटी लड़की वासेन्का थी. उसका जन्म खदान में ही हुआ था और वो गर्मियों और सर्दियों में भी वहीं रहती थी. उसकी मां वहां उस बैरक में एक रसोइया थीं जहां फोरमैन रहते थे; जहां तक उसके पिता की बात है, वासेन्का उनके बारे में कुछ भी नहीं जानती थी.

आपको यह बताने की जरूरत नहीं है कि उस तरह के बच्चे किस तरह का जीवन जीते थे. मजदूरों को उस सारी यातना के दौरान अपनी जीभ पर नियंत्रण रखना पड़ता था, लेकिन जब वो उनके लिए बहुत अधिक हो जाता था तब वे उस बच्ची को गालियां देते थे या उसके सिर पर चपत लगाते थे क्योंकि उन्हें किसी पर तो अपनी भड़ास निकालनी ही होती थी. हां, उस लड़की का जीवन बहुत कड़वा था. एक अनाथ से भी बदतर. और उसे जल्दी काम करने से कोई नहीं बचा सकता था. एक बच्ची, जिसके हाथ मुश्किल से लगाम पकड़ने में सक्षम थे, उसे लोगों ने तुरंत ढुलाई के काम पर लगा दिया. "लोगों के पैरों के नीचे आने की बजाए रेत ढोओ!"

जैसे ही वो थोड़ी बड़ी हुई तो लोगों ने उसे कुछ औज़ार दिए और अन्य नौकरानियों और महिलाओं के साथ उसे भी रेत में रत्न खोजने के लिए भेज दिया.

और उसके बाद उन लोगों को इस बात का अहसास हुआ कि वासेन्का में उस काम के लिए एक वास्तविक कौशल था. उसने किसी भी अन्य महिला से अधिक रत्न इकट्ठे किये, और वो सबसे अच्छे, बड़े और मूल्यवान रत्न लाई.
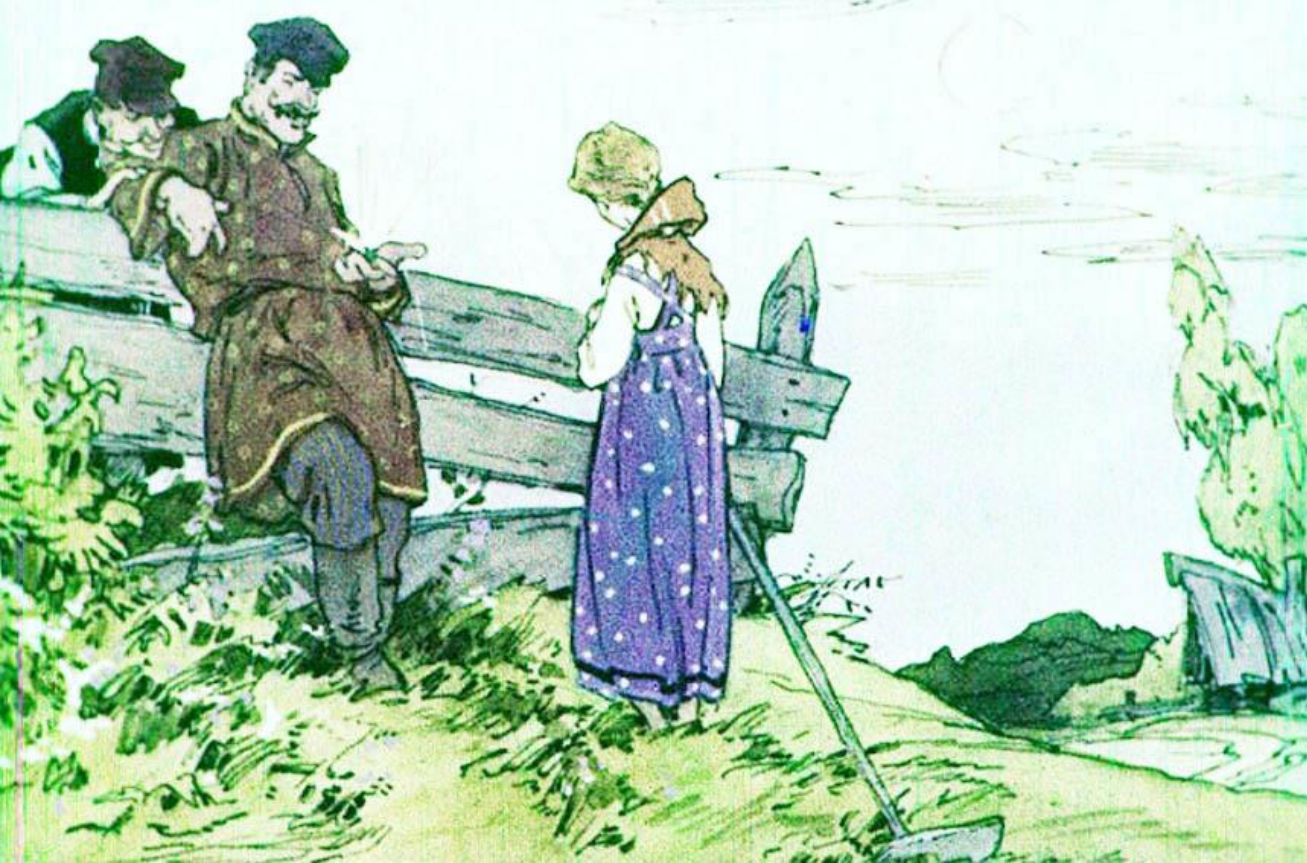
वह एक सरल हृदय वाली नौकरानी थी. उसे जो कुछ भी मिलता वो तुरंत अपने ऊपर वालों को उन्हें सौंप देती थी. और निस्संदेह वे लोग लड़की से बड़े खुश थे. कुछ को वो बैंक में रख देते थे, कुछ अपनी जेब में और कुछ अपने गाल में छिपा लेते थे. आप उस पुरानी कहावत को जानते ही होंगे - एक बड़ा आदमी जिस चीज को अपनी जेब में डालता है, छोटे आदमी को उसे छिपाना पड़ता है. और फिर सभी ने वासेन्का की मिलकर प्रशंसा की. उन्होंने उसे एक उपनाम भी दिया - "लकी आई" यानी “भाग्यशाली आंख”. जब भी उनमें से कोई आता, वो सीधे वासेन्का के पास जाता था.

"अच्छा, लकी आई, क्या तुम्हारे पास कुछ देखने लायक है?"

वासेन्का उसे वो दे देती जो उसके पास होता, और फिर वो एक हंस की तरह उसे चट कर जाता. "अच्छा, अच्छा, आगे बढ़ो! अच्छे से खोजो, मेरी लड़की, अच्छे से खोजो!"

वासेन्का ने खूब खोजा, क्योंकि उसे वो करना पसंद था.

एक बार उसे अपने अंगूठे के आकार का एक पत्थर मिला जिसे देखने के लिए सभी बड़े लोग दौड़ पड़े. ताकि कोई उसे चुरा न ले, इसलिए उन्होंने उसे बैंक में भेजा. और उसके बाद, ज़ार का वो खजाना किसी विदेशी भूमि पर ले जाया गया. लेकिन मैं आपको उस ख़ज़ाने के बारे में बताना नहीं चाहता हूं.

वासेन्का की किस्मत ने अन्य महिलाओं और नौकरानियों के लिए स्थिति बद से बदतर बना दी, फोरमैन ने उन्हें कभी अकेला नहीं छोड़ा.

"वासेन्का वो कैसे ढूंढ लेती है, जबकि तुम हमारे लिए बस कूड़ा-कचरा ही लाती हो? लगता है तुम अपने काम पर ध्यान नहीं देती हो."

फिर वासेन्का से कुछ अच्छा सीखने की बजाए बाकी महिलायें उसके विरोध में एकजुट हो गईं. और उसके बाद वासेन्का का जीवन जीने लायक नहीं रहा.
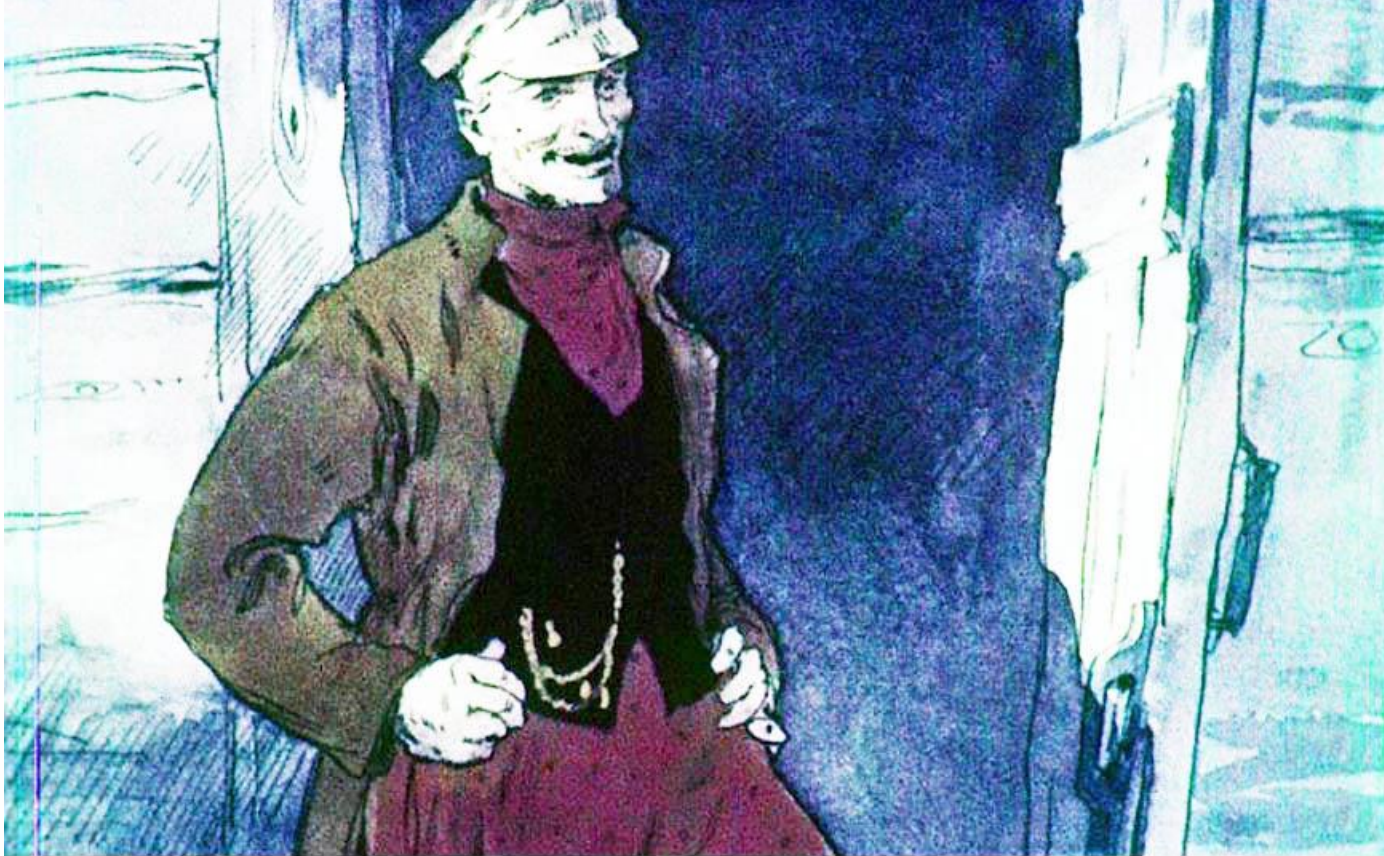
और फिर एक अन्य आदमी मुख्य फोरमैन की चापलूसी करता हुआ आया. वो वासेन्का की अच्छी तकदीर को समझता था, इसलिए उसने कहा: "मैं उस नौकरानी से शादी करूंगा."

उस आदमी के सारे दांत बहुत पहले ही सड़ चुके थे और उसकी भयानक बदबू के कारण आप उसके पांच कदम पास नहीं आ सकते थे. लगता था जैसे वो अंदर से भी सड़ गया था. और वो गिड़गिड़ाता रहा: "मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊंगा, मेरी प्रिय. बस इतना ध्यान रखना, जो पत्थर तुम्हें मिले वो तुम मुझे ही देना, और किसी को नहीं. दूसरों को उन्हें देखने भी मत देना."

वासेन्का काफी ऊंची थी लेकिन उसकी उम्र अभी शादी करने की नहीं थी. वो शायद तेरह या चौदह वर्ष की रही होगी. लेकिन अगर फोरमैन चाहता तो पुजारी किताब में लड़की की कोई भी उम्र लिख देता. खैर, वो सोचकर वासेन्का सचमुच डरी हुई थी. जब उसने उस बूढ़े को देखा तो उसके हाथ कांपने लगे और साथ में उसके पैर भी. फिर वो उसे वो सब कुछ देने में जल्दबाजी करती जो उसे मिलता. और बूढ़ा बड़बड़ाता रहता था: "अच्छी तरह से खोजो, वासेन्का, अच्छी तरह से खोजो! सर्दियों में, तुम पंखों वाले बिस्तर में सोओगी."

जैसे ही वो चला जाता, बाकी महिलाएं वासेन्का पर व्यंग्य करना और उसका मज़ाक उड़ाना शुरू कर देतीं, जिससे वासेन्का का दिल टुकड़े-टुकड़े हो जाता था. शाम को ढोल बजने के बाद वो बैरक में अपनी माँ के पास दौड़कर जाती थी, लेकिन उससे सब कुछ और खराब ही होता था. मां उसको लेकर बेशक दुखी थी, उसने उसकी रक्षा करने की पूरी कोशिश की, लेकिन बैरक में खाना पकाने वाली, भला फोरमैन के सामने क्या कर सकती थी? वो जब चाहे, किसी भी दिन उसे कोड़ों की सजा दे सकता था.

वासेन्का उस शादी को सर्दियों तक रोकने में कामयाब रही, लेकिन उससे ज़्यादा वो और कुछ नहीं कर सकी. फिर वो आदमी रोज उसकी मां के पास आने लगा.

"अच्छा होगा कि तुम शराफत से मुझे लड़की सौंप दो, नहीं तो तुम्हारे लिए और भी बुरा होगा."

जब मां कहती कि उसकी लड़की अभी शादी के लिए बहुत छोटी थी, तो बूढ़ा, पुजारी का कागज मां की नाक ने नीचे रख देता था.

"तुम मुझसे झूठ क्यों बोलने की कोशिश कर रही हो! चर्च की किताब कहती है कि वो लड़की सोलह साल की है. उसकी उम्र सही है. बेहतर होगा कि मुझे और अधिक परेशान मत करो, नहीं तो कल ही तुम्हारी पीठ पर कोड़े पड़ेंगे."

इसलिए मां को खून की घूंट पीनी पड़ती थी.

"लगता है यही तुम्हारी किस्मत में लिखा है, बेटी, और अब तुम उससे बच नहीं सकती."

और लड़की? उसके हाथ-पैर कमज़ोर हो गए और वो एक शब्द भी नहीं बोल पाई. लेकिन रात होते-होते सब मामला पूरी तरह खत्म हो गया क्योंकि वो खदान छोड़कर भाग गई. उसने कोई खास योजना नहीं बनाई, वो सीधे सड़क पर भागती गई, लेकिन वो सड़क उसे किधर ले जाएगी उसके बारे में उसे कुछ पता नहीं था. वो बस इतना चाहती थी कि जितनी दूर संभव हो सके वो उतनी दूर चली जाए.

हवा न होने से मौसम गर्म था लेकिन शाम को बर्फ़ गिरनी शुरू हो गई. छोटे पंखों की तरह कोमल स्नो गिरने लगी. सड़क उसे जंगल में ले गई. वहां भेड़िये और अन्य जंगली जानवर थे, लेकिन वासेन्का को उनसे डर नहीं लगा. उसने अपना मन जो बना लिया था.

"एक बदबूदार आदमी से शादी करने की तुलना में भेड़ियों द्वारा खाया जाना बेहतर होगा."

इस तरह वो आगे बढ़ती गई. शुरू में तो वो बहादुरी से दौड़ी. उसने पन्द्रह या शायद बीस मील की दूरी तय की. उसके कपड़े ज्यादा गर्म नहीं थे लेकिन फिर भी उसे ठंड महसूस नहीं हुई, बल्कि उसे गर्मी महसूस हो रही थी. बर्फ गहरी थी, उसके घुटनों तक, वो अब मुश्किल से उसमें आगे बढ़ पा रही थी, और उससे उसे गर्मी लग रही थी. बर्फ गिरती रही, पहले से कहीं अधिक तेज़ी से. आख़िरकार वासेन्का थक गई, उसे लगा कि अब वो एक भी कदम आगे नहीं चल पायेगी, इसलिए वो सड़क के किनारे बैठ गई.

मैं थोड़ा आराम करूंगी, उसने सोचा. उसे यह नहीं पता था कि वैसे मौसम में खुली जगह पर बैठना सबसे खराब और खतरनाक होगा.

वो वहीं बैठ कर बर्फ को देखती रही और गिरती रही और उससे चिपकती रही. कुछ देर बैठने के बाद उसे लगा कि वह उठ नहीं पाएगी. लेकिन वो डरी नहीं, उसने बस सोचा: मुझे थोड़ी देर और बैठना होगा, ठीक से आराम करना होगा.

खैर, उसने आराम किया. बर्फ ने उसे ठीक ऊपर तक ढक दिया. वो सड़क के किनारे खड़ी घास के एक तिनके की तरह थी. और उसके पास ही में एक गाँव था.

सौभाग्य से एक ग्रामीण सुबह वहां आया - गर्मी के दिनों में वो भी सोना और पत्थर ढूंढता था. खैर, वो एक घोड़े और स्लेज के साथ आया. उसका घोड़ा रुक गया और खर्राटे भरने लगा और उसने उस लड़की के पास जाने से इंकार कर दिया. तभी उस आदमी ने नजर उठाकर देखा तो उसे कोई इंसान बर्फ में दबा हुआ नज़र आया.

वो करीब गया और उसने पाया कि उसका शरीर पूरी तरह जमा नहीं था, वो लड़की की बाहों को मोड़ पाया. इसलिए उसने वासेन्का को स्लेज पर लिटाया, उसे अपनी भेड़ की खाल से ढका और उसके साथ घर चला दिया. फिर उसने और उसकी पत्नी ने उसे आग के पास गर्म करके उसे जीवित किया. कुछ देर में उसने अपनी आंखें खोलीं और उसकी उंगलियां ढीली हो गईं. और उसके एक हाथ में एक बड़ा चमकदार शुद्ध नीला पत्थर था. जब आदमी ने उसे देखा तो वो पहले तो सचमुच में डर गया, क्योंकि वैसी चीज़ उसे जेल डाल सकती थी., इसलिए उसने पूछा: "तुम्हें वो कहां कहां मिला?"

वासेन्का ने कहा, "वो अपने आप उड़कर मेरे हाथ में आ गया."

"वो कैसे?"

तो वासेन्का ने आदमी को अपने बारे में सब कुछ बताया.

जब बर्फ ने उसे ठीक से ढकना शुरू किया, तब अचानक उसके सामने धरती में जाने का एक रास्ता खुल गया. वो बहुत चौड़ा नहीं था और अंधेरा भी था, लेकिन आप उसमें जा सकते थे. वो सीढ़ियां देख सकती थी, और वहां गर्मी थी. वासेन्का खुश थी. उसने सोचा, खदानों में से कोई भी मुझे यहां कभी नहीं ढूंढ पाएगा, और फिर वो सीढ़ियों से नीचे चली गई.

वह लंबे समय तक चलती रही जब तक कि वो एक बड़े मैदान में नहीं पहुंच गई जो इतना बड़ा था कि इसका कोई अंत नहीं था. घास गुच्छों में उगी हुई थी और कुछ झाड़ियां भी बिखरी हुई थीं, वे सभी शरद ऋतु की तरह पीले रंग की थीं. बीच में एक नदी बह रही थी, और वो चिकनी और काली थी और उसमें कभी कोई लहर नहीं थी, मानो वो खुद एक काला पत्थर हो. दूसरी तरफ, वासेन्का के ठीक सामने, एक छोटा सा टीला था और उसके ऊपर एक मेज जैसा बड़ा पत्थर था और उसके चारों ओर स्टूल की तरह छोटे-छोटे पत्थर पड़े थे. लेकिन वो उस आकार का नहीं था जो लोग उपयोग करते थे, वो बहुत बड़ा था. वहां बहुत ठंड थी और कुछ-कुछ डरावना भी था.
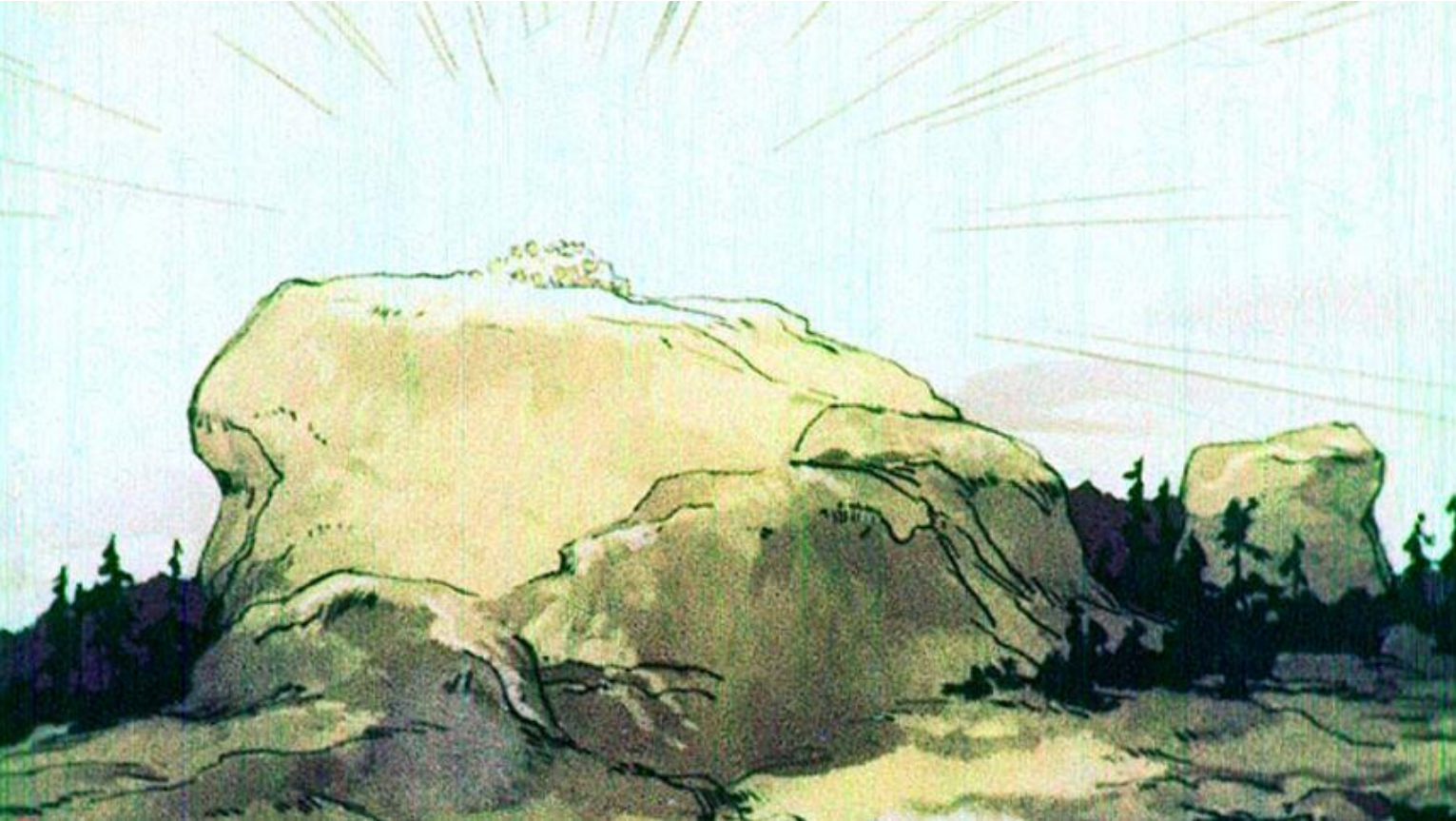
वासेन्का घूम कर वापस जाने ही वाली थी कि टीले के पीछे ढेर सारी चिंगारियां उड़ीं और जब उसने फिर से देखा तो उसे मेज पर कीमती पत्थरों का एक ढेर पड़ा हुआ दिखाई दिया. उनमें सभी रंगों की चमक थी, और उन्होंने नदी को भी कम उदास बनाया था. उन्हें देखकर उसे बहुत ख़ुशी हुई.

तभी किसी ने पूछा: "ये किसके लिए हैं?"

नीचे से एक आवाज़ आई: "सरल लोगों के लिए."

उसी क्षण रंगीन चिंगारियों की बौछार की तरह पत्थर चारों ओर उड़ गये.

टीले के पीछे से एक और ज्वलंत झिलमिलाहट ने मेज पर पत्थरों का एक ताजा ढेर फेंका. उनकी संख्या बहुत अधिक थी. शायद वे एक पूरी वैगन भरने के लिए पर्याप्त थे. और वे पत्थर बड़े थे. फिर किसी ने पूछा: "ये किसके लिए हैं?"

नीचे से उत्तर आया: "वे रोगियों के लिए हैं."
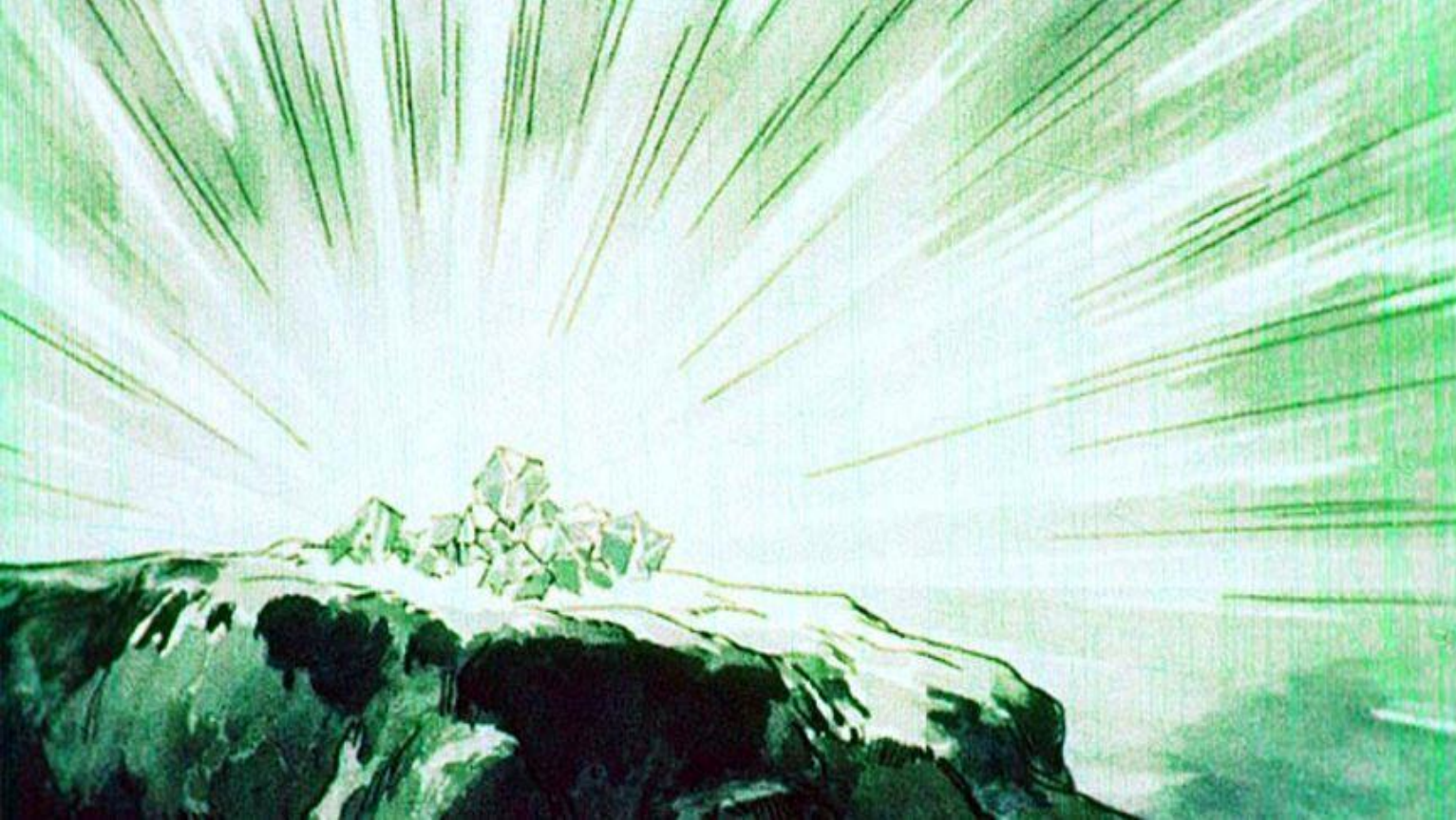
पहले की तरह, पत्थर हर तरफ उड़ गये. यह ऐसा था मानो कीड़ों का झुंड उड़ रहा हो, केवल वे सभी रंगों में चमक रहे थे, कुछ लाल चमक रहे थे और कुछ हरे थे और कुछ नीले-पीले भी थे - सभी प्रकार के रंग थे. और उड़ते समय वे गुनगुना रहे थे. जब वासेन्का उन कीड़ों को देख रही थी, तो तेज रोशनी फिर से टीले के पीछे आई और उसने पत्थरों का एक और ढेर मेज पर रख दिया. इस बार ढेर काफी छोटा था, लेकिन सभी पत्थर बड़े थे और बड़े ख़ूबसूरत थे. और फिर नीचे से आवाज चिल्लाई:

"ये साहसी और भाग्यशाली आंखों के लिए हैं."

अगले ही पल सब पत्थर झपट्टा मारकर छोटे पक्षियों की तरह चारों ओर उड़ गये. वे मैदान में लहराते हुए छोटे-छोटे दीपकों के समान थे. वे बिना किसी जल्दबाजी के चुपचाप उड़ गए. और उसमें से एक पत्थर उड़कर वासेन्का के पास आया और उसके हाथ में इस तरह समा गया जैसे कोई बिल्ली का बच्चा अपना सिर सहलवाना चाहता हो और कह रहा हो - मैं यहां हूं, मुझे ले लो!
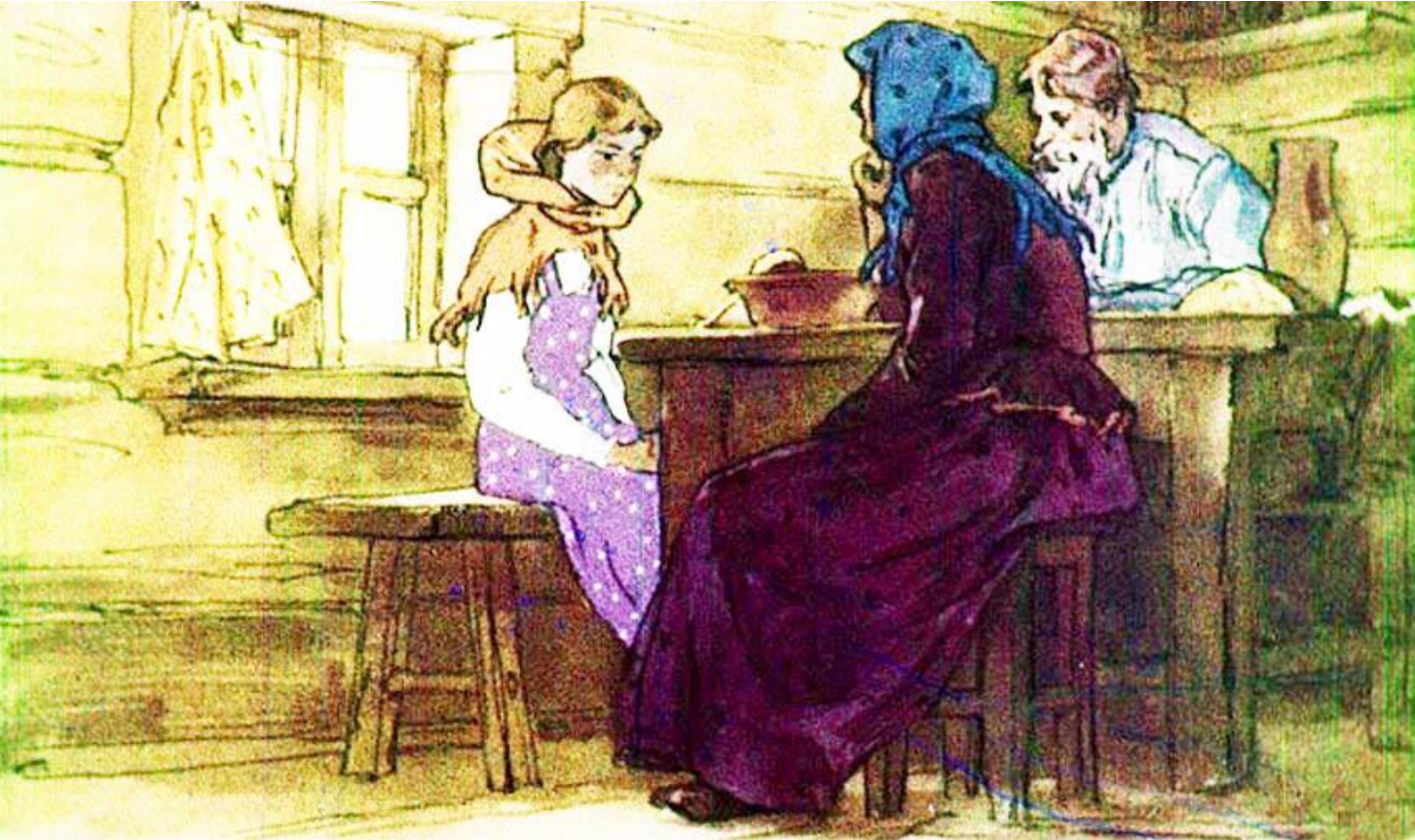
उसके साथ ही प्रकाश बुझ गया और सब कुछ गायब हो गया.

पहले तो उस आदमी और उसकी पत्नी ने वासेन्का की बात पर विश्वास नहीं किया, लेकिन फिर उन्होंने सोचा - उसके हाथ में वो अनूठा पत्थर कहां से आया होगा! उन्होंने वासेन्का से पूछा कि वो कहां से आई थी और वो कौन थी. वासेन्का ने बिना कुछ भी छिपाए उन्हें अपने बारे में सब कुछ बता दिया. और फिर उसने उनसे विनती की: "कृपा मेरे लोगों को यह न बतायें कि मैं कहां हूं!"

उन्होंने इस पर थोड़ा विचार किया, उस आदमी और उसकी पत्नी ने, और फिर उन्होंने कहा: "ठीक है, तुम यहां रुको और हमारे साथ रहो. हम तुम्हें किसी तरह छिपायेंगे, लेकिन हम तुम्हें फेन्या के नाम से बुलाएंगे. याद रखना, अब तुम्हारा यही नाम होगा."

उनकी अपनी बेटी की मृत्यु कुछ ही समय पहले हुई थी, और उसका नाम फेन्या था. और वो वासेन्का की उम्र की ही थी. और एक और चीज़ जिसने मदद की - वो गाँव राजा की भूमि पर नहीं बसा था, वो डेमिडोव एस्टेट पर स्थित था.

तो इस तरह यह कहानी ख़त्म हुई. वहां के मुखिया और लोगों को तुरंत पता चल गया कि वो नौकरानी नई थी, लेकिन उन्हें उस बात की कोई परवाह नहीं थी? वो मुखिया के घर से तो भागी नहीं थी. काम करने वाले हाथों की एक अतिरिक्त जोड़ी का वहां हमेशा स्वागत था. इसलिए मुखिया ने अन्य लोगों के साथ-साथ उसे भी काम सौंपा.

निःसंदेह डेमिडोव एस्टेट पर भी जीवन बिल्कुल मधुर नहीं था, लेकिन वो राजा की खदानों जैसा भी नहीं था. और वासेन्का अपने हाथ में जो पत्थर पकड़े थी उससे भी उन्हें मदद मिली. वो आदमी उसे गुप्त रूप से बेचने में कामयाब रहा. बेशक, उसे उसकी वास्तविक कीमत नहीं मिली, लेकिन फिर भी उसे अच्छी खासी रकम मिली. इसलिए वे कुछ हद तक आसानी से ज़िंदगी जीने में सक्षम रहे.

जब वासेन्का बड़ी हुई तो उसने गांव के एक लड़के से ही शादी की. फिर वो बूढ़ी होने तक उसके साथ ही रही, और उसने अपने बच्चों और पोते-पोतियों का पालन-पोषण किया.